।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को
स्वाधीनता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 36, अंक 37 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 5 अगस्त, 2013 से रविवार 11 अगस्त, 2013 तक

विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114

दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

राष्ट्रीय पर्व : स्वाधीनता दिवस (15 अगस्त) पर विशेष

मैं और मेरा देश, हम और हमारा देश

– प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक सभा

जीवन में आम आदमी उस वस्तु, उस विचार को अधिक महत्त्व देता है जो उसके अनुकूल हो, निकट हों। जिसके प्रति उसके विचार अच्छे हों, जिसे वह अपना मानता हो अथवा जिससे संतुष्टि मिलती हो मिले, जिससे उसका आन्तरिक लगाव हो अथवा जिससे मैं, मेरे का सीधा संबंध जुड़ा हुआ हो।

यही मापदण्ड है, मानवीय घनिष्ठ संबंधों का व्यक्ति, परिवार, वस्तु, स्थान, संगठन सभी इसके दायरे में जाते हैं। किसी व्यक्ति से निकटता या अति लगाव के मुख्यतः 3 कारण हैं, कर्त्तव्य बोध, निज लाभ, नैसर्गिक प्रेम।

अपने पर माता–पिता, आचार्य आदि

– शेष पृष्ठ 5 पर

आर्यसमाज की सेवा समिति द्वारा जारी है उत्तराखण्ड में राहत सामग्री का वितरण

आर्यसमाज के विभिन्न केन्द्रों पर एकत्र हुई राहत सामग्री को उत्तराखण्ड में त्रासदी से पीड़ित परिवारों में राहत सामग्री का वितरण निरन्तर जारी है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्यसमाज पंखा रोड 'सी' ब्लाक जनकपुरी के सहयोग से

हैदराबाद सत्याग्रह स्मृति व्याख्यान समारोह

बुधवार 28 अगस्त, 2013 : दोपहर 12 बजे स्थान : आर्यसमाज जनकपुरी, सी ब्लाक, नई दिल्ली

आर्यसमाज पंखा रोड 'सी' ब्लाक जनकपुरी के श्रावणी वेद प्रचार सप्ताह के इस व्याख्यान समारोह का आयोजन किया जा रहा है। समस्त आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर हैदराबाद सत्याग्रह के शहीदों को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करें। कृपया कार्यक्रम के उपरान्त ऋषि लंगर अवश्य ग्रहण करें।

निवेदक

ब्र. राजसिंह आर्य, प्रधान; धर्मपाल आर्य, व. उप प्रधान; विनय आर्य, महामन्त्री; अनिल तनेजा, कोषाध्यक्ष
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

रमेश चन्द्र आर्य, प्रधान; विजय गुलाटी, कोषाध्यक्ष; अजय तनेजा, मन्त्री
आर्यसमाज पंखा रोड, सी ब्लाक, जनकपुरी

दिल्ली की आर्यसमाजों द्वारा स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण – देशभक्ति गीत एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों का अभिनन्दन समारोह

15 अगस्त, 2013 सायं 4 बजे स्थान : आर्यसमाज पंजाबी बाग पश्चिमी नई दिल्ली

आशीर्वाद	मुख्य अतिथि	अध्यक्षता	अभिनन्दन एवं सम्मान		
आचार्य बलदेव	डॉ. योगानन्द शास्त्री	ब्र. राजसिंह आर्य	महाशय धर्मपाल	डॉ. रामप्रकाश	डॉ. सुरेन्द्र कुमार
प्रधान, सार्वदेशिक सभा	अध्यक्ष, दिल्ली वि.सभा	प्रधान, दिल्ली सभा	अध्यक्ष, आर्य विद्या सभा	कुलाधिपति	कुलपति

विशिष्ट अतिथि : आचार्य विजयपाल जी (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा) श्री सत्यानन्द आर्य जी (प्रधान, आर्यसमाज पंजाबी बाग प.)

देशभक्ति गीत प्रस्तुति : श्री जगत वर्मा जी (सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक)

समस्त आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी एवं सदस्यगण अधिकाधिक संख्या में पधारकर नव नियुक्त पदाधिकारियों को अपनी शुभकामनाएं दें। कृपया कार्यक्रम के उपरान्त प्रीतिभोज अवश्य ग्रहण करें।

निवेदक

धर्मपाल आर्य, व. उप प्रधान; विनय आर्य, महामन्त्री; अनिल तनेजा, कोषाध्यक्ष
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

अशोक मेहतानी, मन्त्री, आर्यसमाज पंजाबी बाग (प.)

राजीव आर्य, महामन्त्री; सुरेन्द्र कुमार रैली, व. उप प्रधान
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

वेद-स्वाध्याय

मेरो मन अनत कहां सुख पावे

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

न घा त्वद्रिगप वेति मे मनस्त्वे इत्कामं पुरुहूत शिश्रय। राजेव दस्म नि षदोऽधि बर्हिष्यस्मिन्त्सु सोमेऽवपानमस्तु ते।। ऋ.10/43/2

अर्थ—(पुरुहूत) बहुतों के द्वारा स्तुत हे परमात्मन्! **(मे मनः)** मेरा मन **(त्वद्रिक्)** तुझ में लगकर **(घ)** निश्चय से **(न अपवेति)** पृथक् नहीं होता। मैं **(त्वा इत्)** तुझ में ही **(कामम्)** कामनाओं, इच्छाओं को **(शिश्रय)** समाहित करता हूँ। **(दस्म)** हे दर्शनीय भगवन्! **(राजा इव)** राजा के समान **(बर्हिषि)** मेरे हृदय सिंहासन पर **(निषद)** विराजमान हूजिये। **(अस्मिन् सोमे)** इस उपासना यज्ञ में **(ते अवपानम् अस्तु)** हम तेरे आनन्द का रसास्वादन करें।

लोग कहते हैं कि जब वे ईश्वर-चिन्तन के लिये बैठते हैं तो उनका मन प्रभुभक्ति में न लगकर इधर-उधर अनावश्यक विषयों में दौड़ता रहता है। उनका कहना सही है परन्तु वे इस तथ्य को नहीं जानते कि दिन भर तो सांसारिक विषयों का चिन्तन, लेन-देन और अपना-पराया की उलझन में फंसे रहे, तब एकदम प्रभुभक्ति में मन कैसे लगेगा। जब किसी कच्चे तालाब में स्नान करने के लिये प्रवेश करते हैं तो पहले पैरों में कीचड़ ही लगता है और पानी की लहरें भी विचलित करती हैं। परन्तु जब गहरे पानी में जाकर डुबकी लगाते हैं तो कीचड़ के स्थान पर स्वच्छ जल और तरंगें भी शान्त हो जाती हैं। इसलिये हमें हर समय ईश्वर-प्रणिधान अर्थात् प्रत्येक कार्य को करते समय यह चिन्तन करें कि ईश्वर हमें सब स्थानों पर देख रहा है और मुझ से अच्छे कार्य वह ही करवा रहा है। मैं तो केवल निमित्त मात्र हूँ। जब यह भावना बन जायेगी तब ध्यान में बैठते समय मन के विक्षेप विचलित नहीं करेंगे। यदि कभी कोई वृत्ति उठी भी तो उसे बहुत शीघ्र नियन्त्रित कर लिया जायेगा ऐसा भक्त कहता है—**न घा त्वद्रिक् अपवेति मे मनः** हे परमात्मन्! मेरा मन जब तेरी भक्ति में लीन हो जाता है फिर उसे दीन-दुनिया की सुध-बुध नहीं रहती। उस समय उसे सारे संसार के सुखोपभोग के साधन तुच्छ लगने लगते हैं और सूरदास की ये पंक्तियाँ स्वतः ही मुख से निकल पड़ती हैं—

मेरो मन अनत कहां सुख पावै।
जैसे उड़ी जहाज को पंछी फिरि जहाज पै आवै।
प्रभु नाम को छोड़ महातम और देव को ध्यावै।
परम गंग को छोड़ पियासो दुरमति कूप खनावै।
जिहि मधुकर अम्बुज रस चाख्यो क्यों करील फल भावै।
सूरदास प्रभु कामधेनु तज छेरी कौन दुहावै॥

अरे मन! प्रभु भक्ति के बिना और कहीं सुख का ठिकाना नहीं है। पानी के जहाज के मस्तूल की चोटी पर बैठा हुआ पक्षी भूमि की खोज में चारों ओर उड़ान भरता है परन्तु चारों ओर जल ही जल दीखने पर उसी स्थान पर शान्त होकर बैठ जाता है। प्रभु भक्ति ही सुख का वह समुद्र है जिसमें मन चाहे गोते लगाओ, हर बार आनन्द ही मिलेगा। फिर भला गंगा के निर्मल नीर को छोड़ कुआ खोदना कौन चाहेगा। जिस भौंरे ने कमल पुष्प के रस का पान किया हो वह करील के फल की इच्छा क्यों करेगा। जिसे सब इच्छाओं को पूर्ण करने वाली कामधेनु गाय मिली हो वह उसे त्याग बकरी को क्यों दुहेगा?

हे प्रभो! **त्वे इत् कामम् पुरुहूत शिश्रये** मैं अपनी सभी इच्छाओं, कामनाओं को तुझ में ही समाहित करता हूँ। अब मेरी अपनी कोई कामना नहीं रह गई है। मैंने अपनी बागडोर आप के हाथों में धमा दी है। इसे आप जिधर चाहें चलायें। मैं तो यन्त्रवत् आपका खिलौना बन गया हूँ। अब मैं निश्चिन्त हो गया हूँ। जब तक मैं यह मानता रहा कि मैं ही सब कार्यों का कर्त्ता हूँ तब तक राग-द्वेष की अग्नि में जलता रहा और अहंकार ने मुझे कभी सिंहावलोकन करने ही नहीं दिया। गैस से भरे गुब्बारे की भाँति मैं कल्पनालोक में ही उड़ता रहा। मेरे पैर कभी भूमि में टिके ही नहीं। जब से गुरुजनों के सम्पर्क में आया और उनके श्रीमुख से तेरी महिमा को जाना तो अहंकार की वायु मेरे पेट से निकल गई और अब मैं सर्वात्मना तुझे अपने को समर्पित कर सर्वथा शान्त हो गया हूँ।

अब तो केवल यही एक इच्छा है कि जैसे राजा राजसिंहासन पर बैठकर शासन करता है उसी भाँति आप भी **राजेव दस्म नि षदोऽधि बर्हिषि** राजा की भाँति मेरे हृदय सिंहासन पर विराजमान हूजिये और मुझे अनुशासित कीजिये जिससे सन्मार्ग पर चलता हुआ मैं अन्त में मुक्ति पथ का पथिक बन जाऊँ। हे प्रभो! मैं यद्यपि सत्यमार्ग पर चलने का प्रयत्न करता हूँ। मैं सब प्राणियों में अपनी जैसी ही आत्मा मान हिंसा से दूर रहता हूँ। सत्य बोलना और तदनुसार आचरण करना मेरी दिनचर्या का अंग है। मन, वचन, कर्म से भी किसी दूसरे के धन पर मेरी कुदृष्टि नहीं है। परन्तु फिर भी जाने-अनजाने में त्रुटि होने की सम्भावना तो रहती है। जब आप मेरे स्वामी बन मेरा मार्गदर्शन करेंगे तब मैं सर्वथा निरापद हो जाऊँगा।

दूसरा यह लाभ होगा कि **अस्मिन्त्सुसोमेऽवपानमस्तुते** इस उपासना-यज्ञ में प्रतिदिन तुझ से मिलकर मुझे असीम आनन्द की प्राप्ति होगी। जैसे पुत्र सायंकाल अपने पिता से मिलता है तो दिन भर की कथा-व्यथा को सुनाकर उनका मार्गदर्शन प्राप्त कर निश्चिन्त हो जाता है और पिता भी उसे आश्वासन दे उसका उत्साह-वर्धन करता है इसी भाँति जब आप मेरे इस उपासना यज्ञ में ब्रह्मा बन मेरा मार्गदर्शन करेंगे तो मेरा मन-मयूर नाच उठेगा और मैं दोगुने उत्साह से दिन भर अपने कर्तव्य-कर्मों को करता हुआ क्षणभर भी आपसे दूर नहीं रहूँगा। फिर मुझे किसी का भय नहीं रहेगा। क्योंकि जिसपर आपकी कृपा दृष्टि रहती है, उसका कोई क्या बिगाड़ सकता है। जब आपका दर्शन सुलभ हो गया हो फिर संसार के सारे प्रलोभन मिलकर भी मुझे अपने पथ से विचलित नहीं कर सकेंगे। इसलिये हे सोम **रारन्धि नो हृदि** हमारे हृदय में विराजिये।

- क्रमशः

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे –

आर्यसमाज राधापुरी, दिल्ली द्वारा एकत्र राशि

265	सर्वश्री ऋषिराज वर्मा	1000
266	समेश चन्द्र आर्य	500
267	श्रीमती शकुन्तला रुस्तगी	500
268	श्रीमती कुसुम शर्मा	500
269	विजय कुमार गर्ग	500
270	ओम प्रकाश चौहान	200
271	श्रम्मती विजया कपिला	200
272	सत्यपाल मल्होत्रा	500
273	सुरेन्द्र आर्य	500
274	राजनाथ सिंह	100
275	हिमांशु गर्ग	1500
276	के. डी. निराश	500
277	प्रमोद महाजन	500
278	लखवीर सिंह	500
279	सतेन्द्र महाजन	500
280	राजेन्द्र भारद्वाज	500
281	भरत कपूर	500
282	सुनील मल्होत्रा	500
283	राजेश कुमार	500
284	**आर्यसमाज मदनगीर**	**2100**
285	आर्यसमाज पुष्पांजलि एन्कलेव पीतमपुरा, दिल्ली	21000
286	आर्यसमाज टैगोर गार्डन (ए.सी. ब्लाक)	15000

आर्य उप प्रतिनिधि सभा बस्ती मंडल द्वारा एकत्र

287	ओम प्रकाश आर्य	5000
288	वेद कुमार आर्य	500
289	बृजकिशोर	500
290	कौशल सिंह	500
291	आर्यसमाज खलीलाबाद	2100
292	हीरालाल शिवप्रसाद	1100
293	आर्यसमाज मेहदाबल	1100
294	अशोक गुप्ता	500
295	गोपी किशनलाल	151
296	सीताराम	101
297	**शिवलाल जुनेजा**	**5000**
298	आर्यसमाज ग्रुप हाउसिंग विकासपुरी नई दिल्ली	11000
299	रवीन्द्र कुमार, सरिता विहार	2500
300	वेद प्रकाश मल्होत्रा	1100
301	ओम प्रकाश भाटिया	1100
302	प्रियदर्शन	250
303	श्रीमती विद्यावती मनचन्दा	500
304	गोपाल कृष्ण	250

– क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। – *महामन्त्री*

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों ने निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन शुल्क भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें अन्यथा **इस मास से आर्यसन्देश भेजना बन्द कर दिया जाएगा। वार्षिक शुल्क 250/- रुपये** तथा **आजीवन शुल्क 1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए सदस्य संख्या तथा पिनकोड अवश्य लिखें। – ***सम्पादक***

हमारा सर्वस्व – "ईश्वर, वेद और सृष्टि"

– *मनमोहन कुमार आर्य*

हम मनुष्य हैं और वेदों ने हमें दो पैर वाला प्राणी कहा है। हमारा शरीर जड़ है जिसमें एक जीवात्मा नाम से जाना जाने वाला चेतन तत्त्व निवास करता है। हम कहते हैं कि यह मेरी आंख है, यह मेरी नाक है, यह मेरा कान है और यह मेरा हाथ है आदि, इससे ज्ञात होता है कि मैं आंख, नाक, कान व हाथ आदि या मेरा पूरा शरीर 'मैं' नहीं हूं बल्कि इन से भिन्न हूं। यह शरीर एवं इसमें सभी अंग मेरे अवश्य हैं परन्तु मैं इन सबसे भिन्न हूं। मैं कैसा हूं तो अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि मैं एक चेतन तत्त्व हूं जो अत्यन्त सूक्ष्म, नेत्रेन्द्रिय से अगोचर, सत्य, अविनाशी, अजन्मा, अमर, नित्य, अल्पज्ञ, अल्प परिमाण, अणुरूप, एकदेशी, ससीम, शुभ–अशुभ कर्मों का कर्त्ता व इनके सुख व दुःख रूप फलों का भोक्ता हूं। इस संसार में मेरा जन्म माता व पिता से हुआ है। जन्म धारण करने में मेरी व किसी की भी मर्जी नहीं चलती। यदि जन्म लेने की स्वतन्त्रता होती तो मैं कहीं और व किसी अन्य माता–पिता से जन्म लेता। मुझे जन्म देने वाला माता–पिता से भिन्न अन्य कोई अवश्य है जिसने निर्णय किया कि वर्तमान जीवन के माता–पिता मेरे माता–पिता होगें। फिर प्राकृतिक प्रक्रिया से मेरा जन्म हो गया। मुझे कर्म करने की स्वतन्त्रता है पर मैं फलों के बन्धन में बन्धा हुआ हूं। अल्पज्ञ व अल्पशक्ति वाला होने से मैं जो कार्य करता हूं उसमें कमियां रह जाती हैं। विद्याध्ययन एवं पुरुषार्थ से मैं अपने कार्यों में दक्षता प्राप्त करता हूं। ऐसा करके मैं एक सामान्य व्यक्ति बनता हूं जो अपना निर्वाह अन्यों की तरह सामान्य रूप से या उनसे कुछ उन्नत तरीके से व्यतीत करता हूं। यह कुछ–कुछ मेरा परिचय है।

हमारी वर्तमान पीढ़ी व सृष्टि की आदि से लेकर अब तक उत्पन्न हुए सभी पूर्वजों व नाना योनियों के जीवधारियों को यह सारा संसार बना बनाया मिला है। हम सूर्य, चन्द्र, तारे, नक्षत्र, नाना ग्रह व आकाशीय छोटे–बड़े पिण्ड, आकाश, पृथिवी, अग्नि, वायु, जल, वन, पर्वत, नदियां, समुद्र, अन्न–औषधियां आदि वनस्पतियां आदि संसार में देखते हैं जो सभी हमें बनी बनाई मिली हैं। यह सब वस्तुयें किससे प्राप्त हुई हैं?, हम व प्रायः सभी लोग इस पर विचार नहीं करते। हमें लगता है कि सभी मनुष्य रात–दिन केवल अपने–अपने अन्य–अन्य कार्यों में लगे हैं और इस ओर ध्यान ही नहीं जाता। एक कारण यह भी है कि यदि वह इसका उत्तर भिन्न–भिन्न मत के धार्मिक लोगों से पूछते हैं तो उनके उत्तरों से समाधान नहीं होता। वे या तो परम्परागत, अविवेकपूर्ण या असत्य उत्तरों को मान लेते हैं या उसे स्वीकार ही नहीं करते। उनके पास इस बात के लिए समय नहीं हैं कि वह उन विद्वानों की तलाश करें जो इनके सत्य उत्तर जानते हैं। इन सब उत्तरों में से एक उत्तर है कि यह सारा संसार एवं इसकी समस्त वस्तुयें एक परम विशाल, अनन्त, सर्वव्यापक, सर्व शक्तिमान चेतन सत्ता ने बनाई हैं। उसे सृष्टि बनाने व चलाने का ज्ञान है और अब तक वह अनन्त बार सृष्टि को बनाकर चला चुका है और यह क्रम अनन्त बार इसी प्रकार से चलेगा। इस सृष्टि के आदि से ईश्वर इसे बना कर चला रहा है। 4 अरब 32 करोड़ वर्ष की सृष्टि की आयु है। जब यह पूर्ण हो जायेगी तो ईश्वर द्वारा यह सृष्टि प्रलय को प्राप्त हो जायेगी। प्रलय की अवस्था वह अवस्था है जो इस सृष्टि की रचना से पूर्व की, इसकी कारण अवस्था, थी अर्थात् सत, रज व तम की साम्यावस्था। विवेक से यह ज्ञान होता है कि ईश्वर इस सृष्टि को धारण कर रहा है। जब तक वह इसे धारण किए हुए है, यह संसार भली–भांति चल रहा है। ईश्वर की रात्रि के आरम्भ होने पर कि जब वह सृष्टि को धारण नही करता, वह अवस्था प्रलय की होती है। तब सब कुछ नष्ट हो जायेगा। सूर्य, चन्द्र, तारे, सभी आकाशीय पिण्ड व पृथिवीस्थ सभी रचनायें अपने कारण–मूल प्रकृति में विलीन हो जायेंगी।

जिस प्रकार हमारा आत्मा अति–सूक्ष्म है, यह हम सब अनुभव करते है। यह चेतन तत्त्व, ज्ञान व कर्म स्वभाव वाला है, यह भी हम अनुभव करते हैं। यह इतना सूक्ष्म हैं कि न तो हम स्वयं की आत्मा को देख पाते हैं न अन्य प्राणियों की आत्माओं को जो दैनिक जीवन में माता–पिता, भाई, बहिन, पत्नी व बच्चों के रूप में हमारे सम्पर्क में रहतीं हैं। हमें उनके केवल शरीरों के दर्शन होते हैं और आंखों को देखने पर उसमें आत्मा की चमक दिखाई देती है जो मृतक शरीर की आंखों में नहीं होती। जीवात्मा की अति सूक्ष्मता के कारण उसका आकार प्रकार हमें अपने नेत्रों से दिखाई नहीं देता। चिन्तन करने पर हमें ज्ञान होता है कि ईश्वर भी हमारी आत्मा के कुछ समान सत्य, चित्त, सर्वव्यापी, निराकार, हमारी आत्मा से भी सूक्ष्म, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान सत्ता है। उसी ने यह संसार बनाया है और वही इसको धारण किए हुए है अर्थात् इसका सर्वोत्कृष्ट रूप से संचालन कर रहा है। यहां कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति यह कहेगा कि यद्यपि वह ईश्वर को देख तो नहीं पा रहा है परन्तु ईश्वर के जिस स्वरूप का उल्लेख किया गया है, उसका होना तर्क की दृष्टि से सिद्ध है और उसका होना असम्भव नहीं है। अब प्रश्न यह है कि कैसे पता चले कि वह वस्तुतः है। यहां हम महर्षि दयानन्द का उल्लेख करना चाहते हैं। वह प्रातः व रात्रि समय में समाधि लगाया करते थे। समाधि क्या होती है? ईश्वर का ध्यान जब स्थिर हो जाता है, टूटता नहीं, अखण्डित रहता है, उस ध्यान की निरन्तरता को समाधि कहते हैं। उन्होंने सम्यक्–ध्यान व समाधि के बारे में अपने ग्रन्थों में लिखा है। उनके अनेक अन्तेवासी बन्धुओं ने उन्हें समाधि लगाये हुए भी देखा था जिसका वर्णन साहित्य में उपलब्ध है। उन्होंने लिखा है कि ईश्वर का ध्यान वा उपासना करने से आत्मा के दुर्गुण दूर होकर ईश्वरके गुणों के सदृश हो जाते हैं और आत्मा का बल इतना बढ़ता है कि बड़े से बड़े दुःख के प्राप्त होने पर भी, यह हमारी स्वयं की मृत्यु का दुःख भी हो सकता है, मनुष्य घबराता नहीं है, क्या यह छोटी बात है? उनके जीवन की घटनायें उनके इस वक्तव्य की सत्यता का प्रमाण हैं। योग दर्शन के प्रणेता महर्षि पतंजलि ने अनुभव व तर्क, दोनों के आधार पर ध्यान व समाधि एवं योग के अन्य सभी अंगों पर प्रयोग व अभ्यास से सत्य सिद्ध किए जा सकने वाले निष्कर्ष दिये हैं। जब ईश्वर का ध्यान करते हुए उसमें निरन्तरता आ जाती है और साधक घंटों उसमें स्थित व स्थिर रहता है तो उस समाधि के सिद्ध होने पर हृदय में स्थित जीवात्मा में ईश्वर का साक्षात्कार, ईश्वर की प्रत्यक्ष अनुभूति व ईश्वर के आनन्द का अनुभव जो संसार के सभी सुखों से कहीं अधिक बढ़कर होता है, जीवात्मा को अनुभव होता है। यह साक्षात्कार ऐसा है जैसा कि हम हमने सांसारिक जीवन में वस्तुओं को देखकर, सुनकर, पढ़कर निर्भ्रान्त व संशयरहित ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसके बारे में मुण्डक उपनिषद् के 40वें श्लोक – ***'भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयः। क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।'*** में कहा गया है कि ईश्वर का साक्षात्कार अथवा अपने आन्तरिक ज्ञान–चक्षुओं से दर्शन हो जाने पर हृदय की सभी गांठें व ग्रन्थियां खुल जाती हैं, सभी संशय मिट जाते हैं, दुष्ट कर्म क्षय को प्राप्त होते हैं और तब उस परमात्मा जो कि अपने आत्मा के भीतर और बाहर व्याप रहा है, उस में वह जीवात्मा निवास करता है। ईश्वर के साक्षात्कार के बाद जब मृत्यु आती है तब जीव जन्म–मरण के चक्र से मुक्त होकर मुक्ति में चला जाता है। मुक्ति का लाभ व सुख ऐसा है जिसकी उपमा में कोई सांसारिक सुख या पदार्थ नहीं है। हां, यह तो कह सकते हैं कि बड़े से बड़े सांसारिक सुख मुक्ति के सुख की तुलना में हेय व न्यून ही हैं। यह मुक्ति विवेकशील कुछ ही लोगों को प्राप्त होती है। हम यह अनुमान करते हैं कि अतीत में यह मुक्ति योगेश्वर कृष्ण, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, महर्षि दयानन्द सरस्वती, इनसे पूर्व हुए सन्त, ऋषि–महर्षि व योगियों को प्राप्त हुई होगी। प्रत्येक समझदार एवं ज्ञानी मनुष्य को वेद मार्ग पर चल कर मुक्ति की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होना चाहिये, ऐसा वैदिक साहित्य के विद्वानों का मत है।

इस विवरण से हम समझते हैं कि आधुनिक, तार्किक व विचारशील माने जाने वाले युवा–वृद्ध बन्धु भी काफी सीमा तक ईश्वर के अस्तित्त्व व उसके साक्षात्कार के सिद्धान्त व मान्यता से सहमत होंगे। यदि उन्हें कहीं कुछ भी शंका है तो हमारा सुझाव है कि वह स्वयं वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय एवं योग का व्यावहारिक प्रयोग करके देख सकते हैं। कुछ दिनों के स्वाध्याय व अभ्यास से उन्हें अनुमान होगा कि ईश्वर, जीवात्मा व ईश्वर के साक्षात्कार की मान्यताएं सत्य व यथार्थ हैं। इस लेख की यहां तक की यात्रा के बाद एक साधक व अध्येता की ज्ञान प्राप्ति की तीव्र अभिलाषा का उत्पन्न होना स्वाभाविक लगता है। उसे यह भी अनुमान हो गया होगा कि ईश्वर ने जब सृष्टि बनाई तो लोगों के कल्याण के लिए उसने कुछ ज्ञान तो आदि मनुष्यों को अवश्य दिया ही होगा अन्यथा वह अपने सभी सांसारिक व्यवहार कैसे करते और ईश्वर का ज्ञानवान व सर्वशक्तिमान होना व्यर्थ सिद्ध होता है। यदि वह ज्ञान नहीं देता तो अनेक पीढ़ियां तो बिना किसी ध र्म–कर्म का पालन किये ही समाप्त हो जातीं और यदि अन्य किसी हेतु से, जो सर्वथा असम्भव है, ज्ञान प्राप्त भी होता तो उसमें भी नाना मत होते और सत्य व असत्य का निर्णय करना कठिन हो जाता। अतः जिज्ञासा उठने पर हमें स्वाध्याय व विवेक से ज्ञात होता कि संसार की सबसे प्राचीन ज्ञान की पुस्तक का नाम वेद है। वेद चार हैं, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद। सौभाग्य से हमारे पूर्वजों के पुरुषार्थ से यह आज भी अपने शुद्ध रूप में उपलब्ध हैं। अब बात आती है कि वेदों के सत्य अर्थ कैसे जाने जायें तो इसके लिए भी हमारे पूर्वजों ने अथक परिश्रम किया और हमें संस्कृत की अष्टाध्यायी– महाभाष्य–निरुक्त– निघण्टु पद्धति दी है जिसका अध्ययन कर कोई भी व्यक्ति स्वयं वेदों के अर्थो को जान सकता है। यदि किसी कारण संस्कृताध ययन में परिश्रम नहीं कर सकता है, तो महर्षि दयानन्द सरस्वती, आचार्य रामनाथ वेदालंकार, स्वामी विश्वनाथ विद्यालंकार व अन्य विद्वानों के उपलब्ध वेद भाष्यों से लाभान्वित हो सकता है। हमारा अनुमान है कि सच्चे जिज्ञासुओं को ईश्वर व सृष्टि विषयक सभी प्रश्नों का उत्तर व समाधान प्राप्त हो जायेगा। – **शेष पृष्ठ 6 पर**

'जन्म चरित्र पत्रिका मिलाइए, जन्म कुण्डली नहीं'

– अर्जुन देव चड्ढ़ा

विवाह मनुष्य जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना है। मानव जीवन के चारों महत्त्वपूर्ण पुरुषार्थों– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से धर्म, अर्थ और काम का प्रमुख आधार गृहस्थ आश्रम है। संसार में प्रत्येक लड़का तथा लड़की यह चाहते हैं कि उसका जीवनसाथी ऐसा हो जिससे उसका गृहस्थ जीवन सुख, समृद्धि तथा शान्ति से परिपूर्ण रहे। किसी प्रकार का कष्ट, अशान्ति, दरिद्रता उसके जीवन में नहीं रहे। यही चाहत प्रत्येक भारतीय माता पिता की होती है कि उसके पुत्र तथा पुत्री को योग्यतम वधू या वर मिले, जिससे इनकी गृहस्थी हमेशा सुखी बनी रहे।

गृहस्थ जीवन में सुख, शान्ति तभी संभव है, जब पति तथा पत्नी के आचार विचार एक समान हों। भारतीय परम्परा में हमेशा से ही यह धारणा रही है कि विवाह समान गुण, कर्म तथा स्वभाव वाले युवक–युवतियों में होना चाहिए। सुखी वैवाहिक जीवन के लिए गुण, कर्म, स्वभाव के मिलान को गौण नहीं माना जा सकता है। महर्षि मनु का स्पष्ट कथन है–

उत्कृष्टायाभिरूपाय वराय सदृशाय च।अप्राप्तामपि तां तस्मै कन्यां दद्याद्विचक्षणः।।

अर्थात् यदि माता पिता कन्या का विवाह करना चाहे तो अति उत्कृष्ट शुभ गुण कर्म स्वभाव वाली कन्या के समान रूपलावण्यादि गुणयुक्त वर से ही करें। गुणहीन पुरुष से विवाह की अपेक्षा तो आजन्म बिना विवाह के बैठे रहना ठीक है।

वर्तमान भारतीय समाज में वर तथा वधू के चयन में उसके गुण, कर्म, स्वभाव के मिलान की ओर ध्यान न देकर जन्मपत्रिका अर्थात् जन्मकुण्डली के मिलान पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है। विवाह योग्य पुत्र–पुत्री होते ही माता पिता लड़के लड़कियों के गुणों को न मिलाकर कर्म तथा स्वभाव पर ध्यान न देकर केवल कुण्डलियां मिलाना प्रारंभ कर देते हैं।

कुण्डली का कोई गणितीय या वैज्ञानिक आधार नहीं होता है। एक ही कुण्डली को यदि अलग अलग ज्योतिषियों को दिखाया जाए तो प्रत्येक का फलादेश अलग अलग होता है। एक पण्डित जिस कुण्डली में नाड़ी दोष दिखाता है, वहीं दूसरा पण्डित उस दोष को नकार देता है। एक ज्योतिषी जहां कुण्डली मिलान में 30 गुणों के मिलान को कहता है, वहीं दूसरा उससे कम या ज्यादा ही गुणों का मिलना बताता है। यदि इसका आधार गणितीय है तो जैसे गणित में हमेशा दो और दो चार होते हैं, वैसे ही एक जन्म कुण्डली का सभी ज्योतिषियों द्वारा एक ही फल कथन होना चाहिए।

कुण्डली मिलान के इस नाड़ी दोष, गण दोष, नक्षत्र दोष, काल सर्प दोष, मंगला मंगली दोष आदि के कुचक्र में फंसकर न जाने कितने ही ऐसे युवक युवतियां जिनके गुण, कर्म, स्वभाव परस्पर मिल रहे हों तथा जिनमें स्नेह हो विवाह करने से वंचित रह जाते हैं और बिना अपनी पसंद के जीवन साथी से विवाह कर वैवाहिक जीवन के सच्चे सुख से वंचित रह जाते हैं।

कुण्डली मिलान का यह मिथ्या विज्ञान बेमेल अनचाहे वैवाहिक सम्बन्धों को जन्म देता है। वैवाहिक जीवन में कटुता बढ़ाता है। इसके कारण स्वस्थ मन बुद्धि वाला मनुष्य भी जीवन भर संदेह और डर के घेरे में घिरा रहता है और यंत्रणा का जीवन जीता है। भाग्य के दोष के कारण दुख आता है, यह मानकर कई घरों में स्त्रियों के प्रति हिंसा के भाव उत्पन्न करने में इस कुण्डली मिलान का बड़ा हाथ है।

विवाह में मांगलिक दोष के निवारण के लिए इसके ज्ञाता कैसे कैसे परिहार (उपाय) बताते हैं, यह देखकर बड़ी हंसी आती है। यदि कोई कन्या मांगलिक है तो उसका विवाह पहले मिट्टी के घड़े से करते हैं, उसके उपरान्त उसे फोड़ देते हैं। फोड़ने के उपरान्त उसका लड़के से विवाह करना इस ज्ञान विज्ञान के युग में मतिहीन लोगों का खेल सा लगता है। जो अन्य धर्म तथा संस्कृति वालों के समक्ष हमें उपहास का पात्र बनाता है।

यदि देखा जाए तो इस संसार में मुश्किल से 3 से 5 प्रतिशत ही लोग होंगे वो भी केवल भारत में प्रचलित धर्म, हिन्दू, सिक्ख, जैन आदि विचारों को मानने वाले, जो जन्मपत्रिका का मिलान करके विवाह करते हैं। तो क्या जिन्होंने कुण्डली मिलान कर विवाह नहीं किया, संसार के उन 95 प्रतिशत से ऊपर लोगों का वैवाहिक जीवन सुखी नहीं होता है।

वैवाहिक जीवन के सुखी होने के लिए आवश्यक है युवक तथा युवती के गुण कर्म तथा स्वभाव का मिलान किया जाए। कुण्डली मिलान की यह अन्ध परंपरा वर्तमान में तथाकथित शिक्षित लोगों में ज्यादा दिखाई देती है। साथ ही दूरस्थ रहने वाले लोग भी परस्पर एक दूसरे को जाने बिना मात्र समाचार पत्र या सूचना के अन्य साधन में मात्र विज्ञापन देकर तथा कुण्डली मिलान करके विवाह करते हैं।

सोचिए, क्या इस प्रकार इस अंध विश्वास की पद्धति से किए गए विवाह में जीवन की खुशियां मिल सकती हैं। इसलिए आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्पष्ट मानना था कि वर तथा वधू एक दूसरे के गुण, कर्म और स्वभाव की परीक्षा कर विवाह करें। दोनों का तुल्य शील, समान बुद्धि, समान विचार, समान रूपादि गुण होना चाहिए। दोनों में अहिंसकता, सत्यभाषण, मधुर भाषण, कृतज्ञता, दयालुता, निर्लोभता, देश के प्रति कर्त्तव्यपालन, विद्या ग्रहण आदि गुण होने चाहिए। ये ही सच्चे गुण तथा दोष हैं जिनका मिलान कर विवाह किया जाना चाहिए। साथ ही समान वर्ण (कर्म) वाले युवक तथा युवती से विवाह करना चाहिए। वर्ण का आधार जन्मगत न होकर कर्म के आधार पर है।

इसलिए, विवाह करने योग्य युवक युवतियों को जन्म चरित्र पुस्तिका का मिलान कर विवाह करना चाहिए, न कि जन्मपत्रिका का मिलान कर जिससे वैवाहिक जीवन भार न लगकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का साधन बन सके।

–प्रधान, जिला आर्य प्रति. सभा कोटा,
4–प–28, विज्ञान नगर, कोटा
(राजस्थान) – 324005
मो. 09414187428

आर्यसमाज जनकपुरी सी-3 में भी
एम.डी.एच. हवन सामग्री उपलब्ध
एम.डी.एच.हवन सामग्री आर्यसमाज पंखा रोड, जनकपुरी सी–3 में भी उपलब्ध है। पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र से जो सज्जन/आर्यसमाज लेना चाहें वे वहां से 70/– किलो की दर से प्राप्त कर सकते हैं। पैकिंग 5, 10,20 किलो। – ***मन्त्री***

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी
MDH हवन सामग्री
मात्र 70/– किलो (5,10, 20 किलो की पैकिंग)
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

आर्यसमाज के गीतों को बनाएं अपनी मोबाइल ट्यून (CallerTunes)

आर्यसमाज के गीतों को अपनी मोबाइल ट्यून बनाने के लिए आज ही डाउनलॉड करें और अन्य महानुभावों को भी प्रेरित करें।

Sr.	Song Title	Voda	Idea	Airtel	Tata CDMA	Tata Doco	BSNL (North)	MTS
1	आई फौज दयानन्द वाली	10444132	720080	543211007382	376609	254930	173340	77772509
2	ये प्रभु हम तुम से	10444133	720084	543211007383	376614	254931	173341	77772510
3	होता है सारे देश का	10444134	720081	543211007384	376615	254932	173342	77772511
4	हम को सब दुनिया जाने	10444135	720082	543211007385	376616	254933	173343	
5	जो होली सो होली	10444136	720090	543211007386	376622	254934	173344	77772512
6	पूजनीय प्रभु हमारे	10444137	720105	543211007387	376629	255260	173345	77772513
7	सुनो-सुनो ये दुनिया वालो	10444138	720115	543211007388	376639	254935	173346	77772514
8	यूँ तो कितने ही महापुरुष	10444139	720111	543211007389	376644	254936	173347	77772515
9	दिल्ली चलो (सम्मेलन गीत)			543211462723			1721306	

Voda- SMS "CT code"send to 56789 Idea- SMS "DT Code"send to 55456 Airtel- Dial Code and Say " YES" Tata cdma- SMS "Wtcode" send to 12800 Tata docomo- SMS "CT code" to 543211 BSNL- SMS "BT code" send to 56700 MTS- SMS "CT code" send to55777

उदाहरण के तौर पर आपके पास Idea का कनेक्शन है और आप "Aai Fauj Dayaanand Wali" गीत की धुन अपने Idea मोबाईल पर कॉलर ट्यून बनाना चाहते हैं, तो आप गीत के DT 720080 को टाईप कर इस नंबर 55456 पर एसएमएस करें।

मैं और मेरा देश, हम और.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

व आश्रित परिवार जनों की, संगठन की, समाज की, राष्ट्र की सुरक्षा व्यवस्था व उनके हितों के लिए लगाव कर्त्तव्य की श्रेणी में आते है। व्यापार, नौकरी, पद आदि से लगाव धन प्राप्ति अथवा अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा निज लाभ के लिए होता है। तीसरा नैसर्गिक लगाव ईश्वर प्रदत्त है जो एक माँ का उसके बच्चों के लिए परिवार में आपसी रिश्तों के कारण होता है।

इस श्रेणी में प्रथम श्रेणी कर्त्तव्य की होती है, जिसमें मनुष्य की स्वयं के लिए कुछ प्राप्त करने की भावना नहीं होती है, मुख्य रूप से वह अपने प्रयासों से दूसरे के लिए कुछ करना चाहता है। कर्त्तव्य तो करता है परन्तु इसमें **"इदन्नमम्"** अर्थात् अपने लिए नहीं, को महत्त्व होता है। अपने लिए नहीं की भावना प्रमुख होती है।

इस कार्य के लिए त्याग, समर्पण सर्वोपरि है। कर्त्तव्य बोध परिवार, समाज या किसी संगठन के लिए रीढ़ की हड्डी के समान है। यदि इस भावना को उस परिवार, समाज या संगठन के सदस्यों ने आत्मसात किया है तो तीनों में संगठन, समृद्धि और सुख शान्ति का विस्तार होता रहेगा और यदि उसके सदस्यों ने इसकी उपेक्षा की तो इसके परिणाम विपरीत ही होगें। सामूहिक व्यवस्था में जहां कर्त्तव्यों के स्थान पर व्यक्ति प्रमुख हो जाता है, वहां परिवार या संगठन गौण होता है। वहां स्वार्थ ही पनपेगा, आपसी खींचातानी, मतभेद, कलह, शोषण और संगठन को पतन की ओर ले जाने वाली प्रवृत्ति का पोषण होगा।

ये सारी बातें, सारे सिद्धान्त देश के लिए भी वैसे ही महत्त्वपूर्ण हैं, जितने परिवार, समाज या किसी संगठन के लिए हैं। जब इस देश का नागरिक इसे मेरा देश समझता है, अपना देश समझता है तो इसके प्रति कर्त्तव्य भावना सामने आ जाती है। मेरे से सम्बन्ध जुड़ते ही उसके प्रति लगाव हो जाता है और जब निकटता हो, लगाव हो, घनिष्ठ सम्बन्ध हो तो उसके हित के लिए, उसकी सुरक्षा के लिए, उसकी उन्नति के लिए वह व्यक्ति अपनी सामर्थ्य अनुसार अपने कर्त्तव्यों का पूर्ण पालन भी करता है।

मैं और अपनेपन की भावना के अभाव के कारण आज इस देश की स्थिति स्वतन्त्रता के बाद क्या हो गई इसका मूल्यांकन करें और सन् 1947 के परतन्त्रता के दिनों से आजादी की तुलना करें तो बात तो कड़वी है किन्तु सत्य है कि कोई भी सामान्य व्यक्ति आज की स्थिति को 1947 पूर्व से इसे अच्छा कहने की स्थिति में नहीं है। हाँ ऐसे कुछ हैं जो माफिया बनकर समाज का शोषण कर रहे हैं, प्रजातन्त्र का लाभ उठाते हुए स्वतन्त्रता को स्वच्छन्दता में बदलकर स्वहित लाभार्थ समाज और राष्ट्र को नुकसान पहुंचा रहे हैं। ऐसे व्यक्ति इसी प्रकार की व्यवस्था से खुश रहेंगे, यही उनके फलने–फूलने के लिए लाभदायक है, अनुकूल है।

राजनीति राष्ट्र नीति न होकर कुर्सी की नीति, स्वार्थ की नीति, शोषण की नीति बनती जा रही है।

देश का बहुमत इस व्यवस्था में असंतुष्ट है। चहुंओर यही दिखाई दे रहा है। इस अव्यवस्था का मुख्य व एकमात्र कारण है देश से मेरा और अपने शब्द का रिश्ता नहीं है। अपनत्व की भावना का अभाव है। देश के हितों के लिए दूसरों की दया और सुरक्षा में विश्वास बढ़ गया है, दूसरों से इस व्यवस्था के सुधार की अपेक्षा में जी रहे हैं। हम कुछ कर सकते हैं, हमारा भी कुछ कर्त्तव्य है इस भावना का विचार निरन्तर कम होता जा रहा है। इसलिए अव्यवस्था तथा दुराचरण को खुली छूट मिल रही है। हम सोचते हैं हमें क्या करना, जो चल रहा है चलने दो, जैसा सब भोग रहे हैं वैसा हम भी भोग लेंगे।

इस निराशावादी, अकर्मण्यता और उपेक्षा की विचारधारा ने हमारी कर्त्तव्य भावना को कुचल दिया है। हम स्वार्थी मनुष्य के समान मात्र अपने हितों तक सिमटकर रहने के आदि हो रहे हैं। किन्तु ध्यान रखें यदि देश की व्यवस्था, उसकी सुरक्षा को हम अनदेखा करते हैं तो यह उसके साथ बेईमानी है, न इंसाफी है। उन शहीदों के साथ धोखा है, जिन्होंने अंग्रेजों की दासता हटाने के लिए अपना सबकुछ, परिवार, धन, सम्पत्ति, प्राण सबकुछ देश के लिए न्यौछावर कर दिया। सिर्फ इसलिए कि हमारा अपना देश होगा, हमारी व्यवस्था होगी, परतन्त्रता का कलंक मिटाकर स्वतन्त्र देश के नागरिक कहलाएंगे। हमारी स्थिति आज उस निकम्मी सन्तान जैसी है, जिसके पूर्वज बड़ी मेहनत से सम्पत्ति जोड़कर सौंप गए और हमने उनकी गाढ़ी कमाई को फिजूल खर्ची में उड़ा दिया।

हमारी संस्कृति के आधार वेद हमारा इस मातृभूमि से क्या संबंध है बताते हुए कहता है – **"माताभूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या:"** यह भूमि मेरी माँ है और मैं इसका पुत्र हूँ। यह भावना हमें सनातन धर्म के स्त्रोत वेद बताते हैं। जब हम भारत माँ को अपनी माँ समझते हैं तो हमारा उसके पुत्र होने के नाते उसकी सेवा, सुरक्षा करना जीवन का सबसे बड़ा कर्त्तव्य है। उसकी रक्षा के लिए हमें क्या करना चाहिए, यह भी वेद मन्त्र में पुनः कहा गया – **"वयं बलिहृतः स्याम"**। इस भूमि की रक्षा के लिए हम बलिदानी होवें।

अपने कर्तव्यों का पालन करने वाले को कृतज्ञ और कर्त्तव्यों की उपेक्षा करने वाले को कृतघ्न कहते हैं। कृतघ्न का अर्थ एहसान फरामोश, नमक हराम या नुगरापन है।

हर देशवासी इस राष्ट्र को मेरा देश, अपना देश मानें, उसकी उन्नति, सुरक्षा व्यवस्था में सहयोगी बनें, राष्ट्र को कमजोर करने वाले किसी कार्य को नहीं करें। यही एक राष्ट्रप्रेमी नागरिक का परम कर्त्तव्य है।

राष्ट्रीय पर्व मनाने की सार्थकता है, सच्चाई है, ईमानदारी है। वीर शिवा, रानी लक्ष्मीबाई के हम वंशज हैं, देशद्रोही जयचन्द के आचरण की भर्त्सना करते हैं। इसलिए यह भी देखना होगा कहीं हमारा कोई कार्य ऐसा तो नहीं जो देश के लिए उचित नहीं है।

– जारी शेष पृष्ठ 6 पर

जम्मू–कश्मीर सभा के तत्त्वावधान में भूकम्प आदि विपदाओं से मुक्ति हेतु सामूहिक यज्ञ एवं वेद प्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू–कश्मीर द्वारा 19 मई से 25 मई तक भद्रवाह व आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में उस क्षेत्र में आ रहे भूकम्प आदि विपदाओं से मुक्ति पाने के लिए सामूहिक यज्ञ एवं वेद प्रचार के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2012 दिल्ली के अवसर पर घोषित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन–डरबन (दक्षिण अफ्रीका)

(विश्व वेद सम्मेलन) 28, 29, 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर, 2013

सम्मानीय आर्य बन्धुओं! सादर नमस्ते!

आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली** एवं **आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका** के तत्त्वावधान में इस वर्ष **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 28, 29, 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर, 2013 को द. अफ्रीका की राजधानी डरबन में** सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए अनेक देशों के प्रतिनिधि डरबन पहुंच रहे हैं। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु बड़ी संख्या में आर्यजन पहुंचेंगे।

सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से भाग ले सकेंगे। **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही द. अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा अपने यहां प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था करेगी।** अनेकों आर्यजन डरबन सम्मेलन के इस अवसर पर दक्षिण अफ्रीका महाद्वीप का भ्रमण भी करना चाहते हैं, इस कारण उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए डरबन के अतिरिक्त द. अफ्रीका के अन्य स्मरणीय एवं महत्त्वपूर्ण शहरों की यात्रा का भी कार्यक्रम बनाया गया है।

विस्तृत जानकारी/यात्रा विवरण/आवेदन पत्र हमारी वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलॉड किए जा सकते हैं।

वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालंकार जन्मशती वर्ष के उपलक्ष्य में

'श्रुति मंथन' के प्रकाशन की योजना

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के यशस्वी स्नातक वैदिक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान्, सामवेद भाष्यकार मेरे पूज्य पिता वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालंकार विद्यामार्तण्ड के जन्मशती वर्ष में आचार्य प्रवर की स्मृति को स्थायित्व प्रदान करने के सन्दर्भ में शिष्य परम्परा, विद्वानों एवं परिवारजनों के सहयोग से 'श्रुति–मंथन' नाम से एक बृहदाकार ग्रन्थ प्रकाशित करने का निश्चय किया गया है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन के सम्बन्ध में प्रारम्भिक प्रक्रिया यानि सामग्री–संकलन का कार्य आरम्भ कर दिया गया है। इस कार्य को आगे बढ़ाने में आर्य जगत के सुधीजनों की सक्रिय सहभागिता अपेक्षित है। अतः अनुरोध है कि –

1. जो आर्यजन आचार्य रामनाथ वेदालंकार के निकट सान्निध्य में रहे हों वे अपने स्वानुभूत संस्मरण लेखबद्ध करके भिजवाने का कष्ट करें।

2. यदि आपके बीच किसी महत्वपूर्ण विषय पर पत्राचार हुआ हो और वह आपके पास सुरक्षित हो तो उसे भिजवाने की कृपा करें।

3. यदि पिताजी से सम्बन्धित किसी प्रसंग विशेष का छायाचित्र हो तो वह भी अपेक्षित होगा। उपयोग के बाद आपको वापस कर दिया जाएगा। 4. उनकी किसी कृति पर समीक्षात्मक लेख भी भिजवा सकते हैं। 5. अन्य प्रासंगिक सामग्री यानि समय–समय पर पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित उनके लेख आदि भी भेज सकते हैं।

यह सामग्री आप शीघ्राशीघ्र निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें ताकि पाण्डुलिपि तैयार करके यथासमय मुद्रण हेतु दी जा सके। लोकार्पण 7 जुलाई, 2014 को होना है। – ***डॉ. विनोदचन्द्र विद्यालंकार***
217, आर्य विरक्त आश्रम,
ज्वालापुर– 249407 (हरिद्वार)
मो. 09897509561

आर्यसमाज पंखा रोड 'सी' ब्लाक
जनकपुरी नई दिल्ली का

श्रावणी/वेद प्रचार पर्व

21 अगस्त से 28 अगस्त 2013

प्रवचन : डॉ. निष्ठा विद्यालंकार
भजन : श्री उदयवीर जी (मथुरा)
प्रभातफेरी : 18, 19, 20 अगस्त
हैदराबाद सत्याग्रह : 21 अगस्त
आर्य महिला सम्मेलन : 24 अगस्त
आर्यवीर/वीरांगना सम्मेलन : 25 अगस्त
जन्माष्टमी : 28 अगस्त

– अजय तनेजा, मन्त्री

स्मृतिशेष ला.जयकिशन दास जी का

जन्मशताब्दी समारोह

15 अगस्त, 2013
आयोजन स्थल
महाराजा अग्रसेन कॉलेज सभागार,
रोहिणी, सैक्टर–22, दिल्ली–85
यज्ञ : प्रातः 9 बजे
पारिवारिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम
प्रातः 11 बजे

सम्पर्क सूत्र – प्रदीप 8860082751
वीरेन्द्र 9999554445

दो सौ परिवारों ने वैदिक धर्म अपनाया

उडीसा एवं झारखण्ड की सीमा पर सुन्दरगढ़ जिले के भूकनपड़ा तथा कुछ ग्रामों में 90% भोले–भाले, सरल स्वभाव के वनवासी निवास करते हैं। इनकी सरलता का लाभ उठाकर कुछ राष्ट्रविरोधी तत्त्व इन्हें लोभ–लालच देकर राष्ट्रीय धारा से अलग करके विदेशी मतों में ढाल देते हैं 14 जुलाई, 2013 को उन्हीं में से 200 परिवारों ने श्रद्धापूर्वक यज्ञ में आहुति देकर गुरुकुल आमसेना आश्रम के आचार्य एवं कुशल वैद्य स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती व उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री पं. विशिकेशन शास्त्री के सान्निध्य में पुनः वैदिक धर्म को ग्रहण किया।

कार्यक्रम उत्कल सभा के प्रधान पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी के मार्गदर्शन में उन्हीं के आदेश पर यह धर्मरक्षा अभियान सभा की ओर से चलाया जा रहा है। यह कार्यक्रम श्री वा. परमानन्द जी एवं श्री वासुदेव जी होता के प्रयत्न से किया गया। इस कार्यक्रम में हजारों श्रद्धालु लोगों ने भी पहुंचकर यज्ञ में आहुति दी और प्रसाद ग्रहण किया।

– आचार्य रणजीतार्य 'विवित्सु'

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर,
जिला रेवाड़ी (हरियाणा) का

71वां वार्षिकोत्सव

21 –22 सितम्बर 2013

– धर्मवीर आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज चौक, प्रयाग का

वेद प्रचार सप्ताह

21 अगस्त से 28 अगस्त 2013

प्रवचन : प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु
भजन : श्री नेमप्रकाश आर्य

– पी. एन. मिश्र, मन्त्री

पृष्ठ 3 का शेष

हमारा सर्वस्व – "ईश्वर, ...

हमारा सुझाव है कि वेदों के सत्य–अर्थों को जानने के इच्छुक सभी जिज्ञासुओं को पहले सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका व आर्याभिविनय आदि पुस्तके अवश्य पढ़नी चाहिये जिससे उन्हें ईश्वर व सृष्टि आदि के विषय में प्रभूत ज्ञान हो जायेगा। हम अनुभव करते हैं कि वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर सभी अध्यतेता यह पायेंगे कि वेदाध्ययन से उनका जीवन सफल हुआ है। अन्य लोग जो वैदिक साहित्य के सम्पर्क में नहीं आ पाते है, उनकी ऐसी स्थिति होना सम्भव नहीं है।

अब हम सृष्टि पर विचार करते हैं। वेद एवं वैदिक साहित्य उत्तर देते हैं कि परमात्मा ने यह सृष्टि हमारे त्यागपूर्वक उपभोग के लिए बनाई है। ईश्वर को यह ज्ञान था कि जिन मनुष्यों को वह उत्पन्न कर रहा है, उनकी आवश्यकतायें क्या–क्या होंगी। उसने उदर व जिह्वा भी हमें प्रदान की है। जब व्यक्ति कार्य करता है तो थक जाता है और उसे भूख–प्यास लगती है। भूख की निवृत्ति के लिए भोजन व प्यास की निवृति के लिए जल की आवश्यकता होती है। अतः ईश्वर ने जल व नाना प्रकार के भोजन के पदार्थ बनाये हैं। शरीर को ढकने के लिए वस्त्र की आवश्यकता होती है, अतः इसके लिए भी रूई आदि आवश्यक पदार्थ बनाकर उसका वस्त्र बनाकर उसे उपयोग करने का ज्ञान भी वेद, हमारी आत्मा, मन व बुद्धि में दिया है। इसी प्रकार शरीर में जो इन्द्रियां हैं, उन सबके विषय बनाकर सृष्टि में उपलब्ध करा रखे हैं। यह सृष्टि हमारे शरीर व जीवन के निर्वाह के लिये आवश्यक है। इसका सदुपयोग करना ईश्वर को प्रसन्न करना है और इसका दुरूपयोग करना ईश्वर को नाराज करना है। हम संसार में भी देखते हैं कि हमें किसी से कोई भी वस्तु सदुपयोग के लिए ही दी जाती है। सिपाही को बन्दूक सदुपयोग के लिए दी गई है, यदि वह दुरूपयोग करता है तो अपराधी बन कर सजा पाता है। हमें सृष्टि की प्रत्येक वस्तु का अल्प मात्रा में उपयोग करना है। परिग्रह योग व ईश्वर प्राप्ति में बाधक है। अतः अनावश्यक परिग्रह से बचना चाहिये। शरीर को स्वस्थ रखते हुए ध्यान–उपासना से ईश्वर को प्राप्त कर ब्रह्मवर्चस को प्राप्त हों और मृत्यु के पश्चात ब्रह्मलोक अर्थात् मुक्ति या मोक्ष के अधिकारी बनकर जन्म–मरण के दुःखों से मुक्ति प्राप्त करें।

हमने अपने ज्ञान व अनुभव से यह जाना है कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य व लक्ष्य आत्मा, ईश्वर व सृष्टि का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर योग साधनों से ईश्वर का साक्षात्कार करना व मृत्यु तक की अवधि तक जीवन–मुक्त अवस्था का समय व्यतीत कर मृत्यु के पश्चात जन्म मरण से छुटकर मुक्ति को प्राप्त करना है। ईश्वर के साक्षात्कार व मुक्ति प्राप्ति के के यथार्थ साधन यथा ईश्वरोपासन, यज्ञ, सेवा, परोपकार, सत्संग आदि केवल वैदिक धर्म में ही उपलब्ध हैं। इनको जानना व आचरण करना ही हमारे व सभी मनुष्यों के जीवन का सर्वस्व या परम लक्ष्य है। हमारे ऋषि–मुनियों ने ईश्वर प्राप्ति व मुक्ति के मार्ग को ही मनुष्य का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसके विपरीत जो मार्ग हैं वह मनुष्य को इस जन्म व परजन्म में सुख, स्मृद्धि व मुक्ति के स्थान पर बन्धन में डालकर दुःखमय जीवन व्यतीत कराते हैं। अतः प्रत्येक समझदार व्यक्ति को गहन विचार व चिन्तन कर अपने लक्ष्य का निर्धारण कर उसकी प्राप्ति के लिए प्रयत्नरत होना चाहिये। यदि इस लेख से किसी को लाभ होता है तो हम अपना परिश्रम सार्थक समझेंगे।

– 196 चुक्खूवाला–2,
देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड)
फोन: 09412985121

पृष्ठ 5 से आगे

मैं और मेरा देश, हम और.....

जब हम व्यक्तिगत दृष्टि से सोचें तो उसे अपना अर्थात् मेरा देश कहें जब सामूहिक दृष्टि से सोचें तो हमारा देश कहें। कहने का तात्पर्य यह कि व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों प्रकार से राष्ट्र के सहयोगी बनना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति का उसकी योग्यता व क्षमता के अनुसार महत्त्व है। आज देश अनेक समस्याओं, आशंकाओं से घिरा हुआ है, साम्प्रदायिक विचारधारा के कुचक्र में फंसते जा रहा है। वोट की राजनीति इसे खुली आजादी और सहयोग देकर अपनी स्वार्थ पूर्ति में लगी है।

साम्प्रदायिक विचारधारा ने पाकिस्तान को जन्म दिया। पूर्वांचल अनेक राज्यों में देश का नहीं सम्प्रदाय का प्रभाव है। इससे अनजान रहकर जीने वाले हम देशवासी पुनः किसी खतरे को निमन्त्रण दे रहे हैं। इसलिए संस्कृति और राष्ट्र रक्षा हमारा धर्म है उसको प्रत्येक व्यक्ति जीवन में महत्त्व देवे तभी ये सुरक्षित रह सकते हैं।

इसलिए मातृभूमि के प्रति सदा ये विचार रखें जो मर्यादा पुरुषोत्तम ने दिए – **"जननि जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"** जन्म भूमि स्वर्ग से भी बढ़कर महान होती है।

इसका पालन करना ही हमारा राष्ट्रीय धर्म है।

– इन्दौर रोड, महू (म.प्र.)

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

'शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर'
अर्थात् – सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो

उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ तन–मन–धन से सहयोग करें आर्यजन

दानी सज्जन अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' – खाता सं. 09481000000276
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' – खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010008984897
एक्सिज बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड' – खाता सं. 0649201001 2620
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, देहरादून, IFSC - ORBC 0100 649

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा के उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित** करके **aryasabha@yahoo.com** तथा **dapsvijayarya@gmail.com** पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9760195053 पर श्री पृथ्वीराज आर्य** को सूचित करें ताकि रसीद जारी की जा सके।

– विनय आर्य, महामन्त्री

उत्तराखण्ड त्रासदी से पीडित परिवारों के लिए आर्यसमाज के राहत सामग्री संग्रह केन्द्र

आर्यजन अधिकाधिक मात्रा में राहत सामग्री एकत्र कर इन स्थानों पर भेजें। आप द्वारा भेजी गई राहत सामग्री पीड़ित परिवारों के पुनर्वास में सहायक होगी।

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली

आर्य समाज धामावाला देहरादून (उत्तराखंड)

आर्य समाज हल्द्वानी नैनीताल (उत्तराखंड)

आप दाल, चावल, तेल, मोमबत्ती, चाय, माचिस, मसाले, आदि भेज सकते हैं। कपड़े केवल नए ही भेजें।

शोक समाचार

श्री सुरेन्द्र कुमार वर्मा का निधन

अनेक वर्षों से आर्यसमाज लक्ष्मी नगर, दिल्ली के प्रधान पद के उत्तरदायित्व को निभाने वाले श्री सुरेन्द्र कुमार वर्मा जी का 19 जुलाई, 2013 को 78 वर्ष अवस्था में निधन हो गया। वे गत दो–तीन वर्षों से अस्वस्थ चल रहे थे।

उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। वे अपने पीछे अपने दत्तकपुत्र श्री प्रवीण वर्मा का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

पं. निर्मल चन्द्र शास्त्री का निधन

दक्षिण भारत विशेषकर बैंगलोर में आर्यसमाज की सेवा करने वाले पं. निर्मलचन्द शास्त्री जी का 29 जुलाई, 2013 को प्रातः 4 बजे लगभग 53 वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया। दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय से स्नातक श्री शास्त्री जी स्वतन्त्र रूप से प्रचार कार्य करते थे। चेन्नई से डॉ. दुलालचन्द शास्त्री एवं बैंगलोर के पं. सूर्य दयाल जी ने वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ उनका अन्तिम संस्कार किया।

वे अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी एवं दो बेटियां छोड़ गए हैं। बेटियां अध्ययनरत हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक

आर्यसमाज जनकपुरी बी ब्लाक का

श्रावणी एवं वार्षिकोत्सव

15 अगस्त से 18 अगस्त 2013
ऋग्वेदीय यज्ञः प्रातः 6:45 से 8:30बजे
आर्य महिला सम्मेलनः15 अगस्त 2013
मुख्य समारोह : 18 अगस्त, 2013
प्रवचन : डॉ. विनय विद्यालंकार
डॉ. शिवकुमार शास्त्री
भजनोपदेश : श्रीमती राजमेहन एवं
श्रीमती शशिप्रभा आर्या
– जगदीश चन्द्र गुलाटी, मन्त्री

श्रावणी एवं सामवेद पारायण यज्ञ

9–11 अगस्त, 2013
स्थान : आर्यसमाज राजनगर–2, पालम कालोनी, नई दिल्ली–77
विद्वान् : आचार्य अर्जुन देव वर्णी
भजनोपदेश : श्री रामनिवास आर्य
– हंसराज आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज चन्द्र नगर दिल्ली का

वार्षिकोत्सव

15 अगस्त, 2013
यज्ञः प्रातः 9 से 10 बजे
प्रवचन : आचार्य प्रवण प्रकाश शास्त्री
पं. उदयभानु शास्त्री
भजनोपदेश : पं. मधुर शास्त्री
बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम
– सोमनाथ, मन्त्री

आर्यसमाज टमकोर, झुंझनू का

शताब्दी समारोह

28 अगस्त से 1 सितम्बर, 2013
यजुर्वेद पारायण यज्ञ
ब्रह्मा : डॉ. आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा
आशीर्वाद : स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
भजनोपदेश : श्री कुलदीप आर्य (बिजनौर)
– बासुदेव आर्य, मन्त्री, 9413267663

55वां निःशुल्क जांच शिविर

11 अगस्त, 2013
स्वतन्त्रता सेनानी स्व. श्री छोटूसिंह आर्य के 93वें जन्मदिवस के अवसर पर 55वां निःशुल्क एलोपैथिक चिकित्सा एवं जांच शिविर क्योरवैल डायग्नोस्टिक सेन्टर, कुलदीप आर्य व जनसहयोग से स्वतन्त्रता सेनानी श्री छोटूसिंह आर्य धर्मार्थ हॉस्पीटल स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर में ले. कर्नल डॉ. एस. के. माथुर के नेतृत्व में किया जाएगा। *– संयोजक*

आवश्यकता है

आर्यसमाज मन्दिर (मुल्तान) देवनगर नई दिल्ली– को एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है, जो सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में दक्ष हो। सम्पर्क करें –
नफेसिंह देसवाल, प्रधान
आर्यसमाज देव नगर, 26बी/9,
देशबन्धु गुप्ता मार्ग, नई दिल्ली–5

मगध प्रमंडलीय आर्यसभा

सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन

21–24 नवम्बर, 2013
स्थान : दुर्गा मंडप प्रांगण, नेमदारगंज
विद्वान् : आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय,
आचार्य सोमदेव शास्त्री,
भजनोपदेश : पं. कुलदीप आर्य,
श्रीमती सुदेश आर्या
– पं. संजय सत्यार्थी, संयोजक

आर्यसमाज सागरपुर, दिल्ली–46

वेदकथा

5–8 सितम्बर, 2013
उपदेश : आचार्य योगेन्द्र शास्त्री
भजन : पं. कुलदीप आर्य (बिजनौर)
– जयसिंह वर्मा, मन्त्री

वृद्धाश्रम (वानप्रस्थ आश्रम) का संचालन

आर्य विद्या सभा सलखिया, जिला– रायगढ़ (छ.ग.) द्वारा वानपस्थ आश्रम का संचालन किया जा रहा ह, जिसमें आवासीय वृद्धजनों को निम्न व्यवस्थाएं निःशुल्क की जा रही हैं – 1) आवास, भोजन, वस्त्र, व औषध की निःशुल्क व्यवस्था। 2) दैनिक प्रातः सायं ब्रह्मयज्ञ, देव यज्ञ की व्यवस्था। 3) अध्ययन हेतु वैदिक पुस्तकालय 4) साप्ताहिक निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण एवं चिकित्सा व्यवस्था। 5) स्वदेशी गौवों का निःशुल्क दूध। 6) साधना हेतु सुरम्य वनों के बीच साधना कुटीर। प्रवेश हेतु सम्पर्क करें *– स्वामी रामानन्द सरस्वती, संचालक (9009132088)*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 5 अगस्त, 2013 से रविवार 11 अगस्त, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 08/ 09 अगस्त, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 7 अगस्त, 2013

दिल्ली सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध
श्रावणी पर्व पर वितरणार्थ लघु साहित्य

आपको विदित ही है कि आर्यसमाज द्वारा प्रतिवर्ष रक्षाबन्धन से जन्माष्टमी तक श्रावणी पर्व आयोजित किया जाता है। श्रावणी विशेष तौर पर स्वाध्याय के पर्व के रूप में जाना जाता है।

इस वर्ष **रक्षा बन्धन (मंगलवार) 20 अगस्त, 2013** को तथा **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (बुधवार) 28 अगस्त, 2013** को है। दोनों पर्वों के बीच का सप्ताह आर्यसमाजों द्वारा वेद प्रचार समारोह के रूप में मनाया जाता है।

सभा की ओर से जन साधारण को आर्यसमाज के कार्य, उद्देश्य, इतिहास, मान्यताएं, धार्मिक विश्वास, नियम, महर्षि दयानन्द, वेद, एवं वैदिक संस्कृति के ज्ञान को सरलता–सुगमता से पहुंचाने के लिए कुछ विशेष सामग्री तैयार की है जो कि इस अवसर पर विशेष रूप से युवाओं तथा नव आगन्तुकों को बांटी जा सकती है। इनमें –

एक निमन्त्रण : जन साधारण को आर्यसमाज की विशेषताएं? इतिहास एवं वर्तमान बताते हुए आर्यसमाज से जुड़ने के प्रेरणा हैं (**मूल्य 10/–**)

मानव निर्माण के स्वर्णिम सूत्र : आर्य समाज के मन्तव्यों का ज्ञान: (**मूल्य 3/–**)

लघु सत्यार्थ प्रकाश : बच्चों हेतु सरल भाषा में सत्यार्थ प्रकाश (**मूल्य 10/–**)।

नियमानुसार छूट उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए श्री विजय आर्य 9540040339 से सम्पर्क करें।

प्रतिष्ठा में,

गुरुकुल कांगड़ी से सम्बन्धित दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की समस्त समितियों की अवश्यक बैठक

19 अगस्त, 2013 सायं 5:00 बजे : आर्यसमाज हनुमान रोड

समितियों से सम्बन्धित समस्त अधिकारी एवं सदस्यगण समय पर पधारकर सहयोग प्रदान करें। – विनय आर्य, महामन्त्री, 9958174441

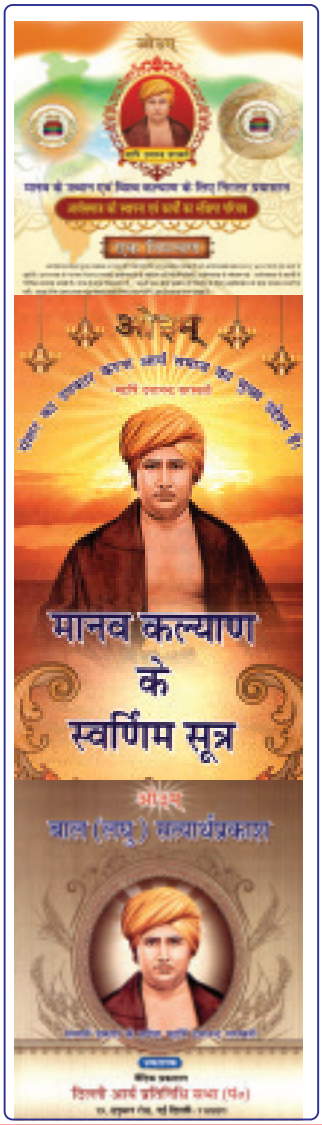

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर